



झारखंड की सबसे चौंकाने वाली बैंक डकैती

गोलमुरी केनरा बैंक कर्मियों को बंधक बनाकर 33.60 करोड़ की डकैती, एक घंटे मचाया आतंक

जमशेदपुर। गोलमुरी बाजार स्थित केनरा बैंक में हथियारबंद अपराधियों ने बड़ी डकैती को अंजाम दिया। सुबह 9.10 बजे बैंक खुलते ही पांच डकैत अंदर घुस गए। उन्होंने सुरक्षा गार्ड से मारपीट की, कर्मचारियों को बंधक बनाया और 40 लाख रुपये नकद के साथ सेफ में रखा 23.80

किलो मॉरगेज सोना लेकर फरार हो गए। सोने की कीमत 33.20 करोड़ बताई जा रही है।

कुल लूट 33.60 करोड़ रुपये की है। अपराधी रेनकोट पहने थे। बैंक खुलने के बाद करीब एक घंटे तक शाखा में दहशत बनी रही। 10.12 बजे वे बाहर निकले और दो बाइक से भाग गए। एक पैदल फरार हुआ। सूचना मिलते ही ग्रामीण एसपी शुभम खंडेलवाल, सिटी डीएसपी संजीव कुमार, ट्रैफिक डीएसपी नीरज कुमार और सात थानों के थानेदार मौके पर पहुंचे। फोरेंसिक टीम ने फिंगरप्रिंट समेत सबूत जुटाए।

बैंक खुलते ही घुस गए: गार्ड संतोष कुमार के अनुसार सुबह 9.10 बजे सफाईकर्मी बैंक पहुंचे। शटर खुलते ही घात लगाए बैठे अपराधी अंदर घुस गए। कर्मचारियों के हाथ-पैर सेलो टेप से बांध दिए गए और शांत रहने को कहा गया। इसके बाद गार्ड पहुंचा तो उसे भी अंदर ले जाकर पिस्तौल की बट से चेहरे पर मारा गया। वह घायल

हो गया। बाद में उसे स्थानीय अस्पताल ले जाया गया। एक अपराधी ने बैंक मैनेजर अजीत कुमार से लॉकर-सेफ की चाबी ली और रुपये पिट्टू बैग में भरने लगा। मैनेजर की कनपटी पर पिस्तौल सटाई गई। एक डकैत ने यह दृश्य अपने फोन पर फोटो भी किया। जैसे-जैसे

केनरा

बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक

मागेश रामानाथन ने कहा,

गोलमुरी शाखा से डकैत 40 लाख रुपये

नगद और 23.80 किलो सोना ले गए हैं।

सोना गहनों के रूप में है, जो गोल्ड लोन के एवज में रखे गए थे। ये 100 से अधिक ग्राहकों के हो सकते हैं। आकलन चल रहा है। जिनके गहने गए हैं, उन्हें भुगतान किया जाएगा।

घटना की खबर फैलते ही ग्राहक बैंक पहुंचने लगे।

कर्मचारी आए, उन्हें बंधक बनाया जाता रहा।

अपराधियों ने बैंक के लॉकर नहीं

खोले। निशाना नकदी और गोल्ड लोन के सोने पर था।

ऐसे भागे अपराधी: बैंक से निकलने के बाद दो अपराधी खालसा होटल के पास खड़ी बाइक लेकर

गोलमुरी मेन रोड की ओर भागे। दो लोहार लाइन की तरफ गए। पांचवां

गली में पैदल घुसा। सीसीटीवी में दिखता है कि पैदल भागने वाला कुछ देर गली में रहा, बैग से रेनकोट निकाला, पहना और फरार हो गया। थोड़ी दूर जाकर गिरोह बिखर गया। पुलिस बैंक और आसपास के सीसीटीवी खंगाल रही है। अब तक 100 से ज्यादा फुटेज की जांच हो चुकी है। अपराधी फुटेज में साफ दिखे हैं। पहचान का काम चल रहा है।

ग्रामीण एसपी शुभम खंडेलवाल ने कहा, पांच अपराधियों ने डकैती की है। बैंक प्रबंधन के



अनुसार 40 लाख रुपये नकद और मॉरगेज गोल्ड ले गए हैं। सभी रेनकोट पहने थे। पुलिस ने केस दर्ज कर एसआईटी बना दी है। इसमें जिले के नौ

डीएसपी, सात थाना प्रभारी समेत 20 पुलिसकर्मी हैं। नेतृत्व सिटी एसपी कर रहे हैं। टीम के सदस्यों को अलग-अलग काम दिए गए हैं।

बिंदल मॉल में ताबड़तोड़ फायरिंग

तीन हमलावर बाइक से पहुंचे थे रेस्टोरेंट में, खाना खा रहे लोगों के बीच 12 राउंड फायरिंग, 4 खोखे बरामद हुए, झामुमो नेता समेत चार जख्मी

मरीन ड्राइव के बिंदल मॉल में उडुपी रेस्टोरेंट दोपहर का सामान्य दृश्य था टेबल पर खाना, बातचीत, आने-जाने वाले ग्राहक। करीब डेढ़ बजे तीन युवक बाइक से पहुंचे और अंदर घुसते ही फायरिंग शुरू कर दी। निशाना उस टेबल पर था, जहां झामुमो नेता और जमीन कारोबारी डोमिनिक सैमसन बैठे थे। कुछ ही क्षण में रेस्टोरेंट भगदड़ की जगह बन गया। गोलियां लगने से चार लोग घायल हुए। डोमिनिक सैमसन, कृष्णा चौधरी, मो. रिजवान और मो. दिलशाद उर्फ दानिश। चारों को टाटा मेन हॉस्पिटल ले जाया गया। दो की हालत गंभीर बताई गई। सैमसन कदमा जयप्रभा कॉम्प्लेक्स के रहने वाले हैं। उनके बाएं कंधे के पास गोली लगी। रिजवान और दिलशाद आजादनगर के हैं। रिजवान को पेट में गोली लगी। दिलशाद को चार गोलियां लगीं, जिनमें दो कमर में हैं। कृष्णा सोनारी वेस्ट लेआउट के निवासी हैं। वे सैमसन के साथ नहीं आए थे, फिर भी बाएं पंजे में गोली लग गई। सैमसन के साथ रेस्टोरेंट में रिजवान और दिलशाद थे।

निशाना टेबल पर था

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक हमलावरों का निशाना सैमसन पर था। उन्हें देखते ही फायरिंग शुरू हो गई। रेस्टोरेंट में डोसा खाने आए अकरम ने बताया कि कुछ युवक अंदर घुसे और दाढ़ी वाले युवक वाली टेबल पर गोलियां चलाने लगे। आवाज होते



ही लोग इधर-उधर भागे। विकास दुबे ने बताया कि गोली लगने के बाद एक युवक खून से लथपथ बाहर आया और अस्पताल ले चलने की गुहार लगाई। उसी वाहन से उसे टीएमएच पहुंचाया गया। मौके पर करीब बारह राउंड चले। पुलिस ने चार खोखे बरामद किए। मॉल से निकलते समय हमलावरों ने एक और गोली चलाई। डीआईजी अनुरंजन किस्पोट्टा ने कहा कि शूटरों में एक की पहचान हो गई है। बाकी सदस्यों का पता लगाया जा रहा है। हमलावर बाइक से आए थे।



विवाद की चर्चा, वजह अभी अधूरी

सूचना मिलते ही डीआईजी अनुरंजन किस्पोट्टा, एसएसपी एहतेशाम वकारिब और ग्रामीण एसपी समेत अधिकारी मौके पर पहुंचे। मौजूद लोगों से पूछताछ हुई। आसपास के सीसीटीवी खंगाले जा रहे हैं। शहर में नाकबंदी कर दी गई। प्रारंभिक जानकारी में घटना से पहले दोनों पक्षों के बीच विवाद और मारपीट की बात आई है। वजह अभी साफ नहीं है। सैमसन का आपराधिक इतिहास पहले से दर्ज रहा है।

डोभो पुल के पास 3 किलो गांजा और 5.19 लाख नकद बरामद

डोभो पुल के आसपास संदिग्ध लेन-देन की सूचना पर जमशेदपुर और सरायकेला पुलिस ने संयुक्त छापा मारा। सोनारी और कपाली थाना की टीम पुलिस अधीक्षक (नगर) के नेतृत्व में पहुंची। छापा में करीब तीन किलो अवैध गांजा और 5 लाख 19 हजार रुपये नकद बरामद हुए। बरामदगी के बाद इलाके में मादक पदार्थ के कारोबार से जुड़े लोगों में हड़कंप है। पुलिस के मुताबिक डोभो पुल के पास अवैध मादक पदार्थ की गतिविधि की सूचना मिली थी। निगरानी बढ़ाकर योजनाबद्ध छापा मारा गया। गांजा और नकदी दोनों जब्त कर लिए गए हैं। अब जांच टीम कड़ियां जोड़ रही है। बरामद 5.19 लाख रुपये कहां से आए और किसलिए रखे गए थे, यह जांच का बड़ा बिंदु है। पुलिस यह भी पता लगा रही है कि गांजा कहां से लाया गया था और किन्हें पहुंचाया जाना था।

कार्रवाई को महज बरामदगी तक सीमित नहीं माना जा रहा। संभावित तस्करी नेटवर्क से जुड़े लोगों



की भूमिका खंगाली जा रही है। बरामद माल किसी बड़े गिरोह का हिस्सा है या स्थानीय कारोबार, यह सत्यापन के बाद साफ होगा। सोनारी और कपाली की यह संयुक्त कार्रवाई दोनों जिलों के समन्वय का हिस्सा है। डोभो और आसपास के इलाके में पुलिस



सक्रियता का संकेत यही छापा माना जा रहा है। फिलहाल जब्त गांजा और नकदी पर कानूनी कार्रवाई

के साथ जांच जारी है। कितने लोग जुड़े हैं, यह जांच पूरी होने पर तय होगा।

मरीन ड्राइव पर बड़ा हादसा, ट्रक में घुसी कार

मंत्री दीपिका पांडेय की बेटी समेत 4 छात्र-छात्राओं की मौत



जमशेदपुर। जमशेदपुर के सोनारी थाना क्षेत्र के मरीन ड्राइव में खड़े ट्रक में कार घुसने से चार छात्र-छात्राओं की मौत हो गई। मृतकों में झारखंड सरकार की ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह की बेटी युविका सिंह उर्फ तृषा सिंह (18), सार्थक अग्रवाल (17 साल), नमन गुप्ता (17) और वंशिका खंडेलवाल (17) शामिल हैं। चारों कारमेल जूनियर कॉलेज में 12वीं के छात्र थे। घटना में कार के परखच्चे उड़ने के साथ तृषा और सार्थक के सिर धड़ से अलग हो गए। कार का अगला हिस्सा ट्रक के पीछे फंस गया। क्रेन बुलाकर कार को बाहर निकाला गया। इसके बाद कटर से कार को काटकर चारों के शव बाहर निकाले गए। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए एमजीएम अस्पताल भेजा। यहां से पोस्टमार्टम के बाद तृषा के शव को एंबुलेंस से रांची ले जाया गया, जहां अंतिम संस्कार होगा। अन्य शवों को भी परिजनों को सौंप दिया गया। ट्रक में फंसी कार को क्रेन से बाहर निकाला गया: पुलिस के अनुसार, हादसा डोबो पुल और दोमुहानी घाट के बीच निर्मल नगर के पास हुआ। चारों छात्र-छात्राएं रात में मैगी खाने के लिए एनएच-33 की ओर निकले थे। वहां से मरीन ड्राइव से होकर घर लौट रहे थे। कार में आगे की सीट पर तृषा बैठी थी और सार्थक चला रहा था। जबकि पीछे की सीट पर वंशिका खंडेलवाल और नमन गुप्ता थे। इस दौरान सड़क पर खड़े ट्रक में कार घुस गई। ट्रक बुधवार रात से ही

खराब था। टक्कर की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। हादसे की सूचना मिलते ही सोनारी और बिष्टूपुर पुलिस भी पहुंची। कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त होने के कारण उसमें फंसे छात्र-छात्राओं को तुरंत बाहर निकालना संभव नहीं था। डीएसपी सीसीआर मनोज ठाकुर के पहुंचने के बाद क्रेन और कटर की मदद से कार को काटकर शवों को निकाला गया। बेटी तृषा की मौत की सूचना के बाद मंत्री दीपिका पांडेय सिंह देवघर से चार्टर्ड विमान से जमशेदपुर के लिए रवाना हुईं। हालांकि खराब मौसम के कारण विमान रांची तक ही पहुंच पाया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने हादसे पर शोक जताया। उन्होंने मंत्री दीपिका पांडेय सिंह की बेटी समेत चार लोगों की मौत पर संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि संतान खोने के दुख को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। इधर, पूर्व मंत्री बन्ना गुप्ता अपनी पत्नी मेयर सुधा गुप्ता के साथ पहले घटनास्थल और फिर एमजीएम अस्पताल पहुंचे। अस्पताल में उपायुक्त और एसएसपी भी पहुंचे। अधिकारियों ने राहत, बचाव और पोस्टमार्टम की प्रक्रिया की जानकारी ली। ट्रक जमशेदपुर से पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर जा रहा था। उस पर बाबरी (लोहे का डस्ट) लदा था। रात 10 बजे ब्रेक डाउन होने के बाद ट्रक सड़क पर खड़ा था। उसमें सुरक्षा के लिए रिफ्लेक्टर, चेतावनी संकेत व अन्य व्यवस्था नहीं थी। ट्रक के पीछे एक टहनी लगा दी गई थी।

एमजीएम में छत हादसा

मुआवजे में देरी और अस्पताल सुरक्षा का मुद्दा हाईकोर्ट पहुंचा, 15 माह बाद भी भुगतान नहीं

एमजीएम मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में 3 मई 2025 को हुए छत हादसे के पीड़ित परिवारों को घोषित मुआवजे का भुगतान अब तक नहीं होने का मामला झारखंड उच्च न्यायालय पहुंच गया है। जन विकास मंच के अध्यक्ष एवं पूर्व विधानसभा प्रत्याशी सौरभ विष्णु ने अधिवक्ता अनिकेत कुमार ओझा के माध्यम से 16 सितंबर 2026 को रांची स्थित झारखंड उच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर कर मामले में न्यायिक हस्तक्षेप की मांग की है। हादसे में डेविड जॉन्सन, लुकास साइमन तिकी, श्रीचंद तांती और रेणुका देवी की मृत्यु हुई थी। याचिका में कहा गया है कि राज्य सरकार की ओर से मृतकों के परिजनों को



जनहित याचिका में केवल मुआवजे के भुगतान का मुद्दा ही नहीं उठाया गया है, बल्कि सरकारी अस्पतालों में मरीजों और आम लोगों की सुरक्षा को लेकर भी व्यापक मांग की गई है। याचिका में राज्य के सभी सरकारी मेडिकल कॉलेजों एवं अस्पतालों का स्वतंत्र एजेंसी से संरचनात्मक एवं अग्नि सुरक्षा ऑडिट कराने और आवश्यक मानकों को पूरा करने वाले संस्थानों को ही जनता के उपयोग के लिए सुरक्षित प्रमाणित किए जाने की मांग की गई है। याचिका में संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन एवं सुरक्षा के अधिकार का हवाला देते हुए सरकारी अस्पतालों में निर्धारित सुरक्षा मानकों के प्रभावी अनुपालन की व्यवस्था सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया है। जिम्मेदारी तय

करने की भी मांग..... याचिकाकर्ता ने उच्च न्यायालय से मुआवजा वितरण में हुई कथित प्रशासनिक देरी की जिम्मेदारी तय करने तथा मामले की परिस्थितियों के अनुरूप आवश्यक आदेश पारित करने की प्रार्थना की है। याचिका में राज्य सरकार, मुख्य सचिव, स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग, भवन निर्माण विभाग, उपायुक्त पूर्वी सिंहभूम, एमजीएम अस्पताल के अधीक्षक तथा सिविल सर्जन, पूर्वी सिंहभूम को प्रतिवादी बनाया गया है। “पहली प्राथमिकता परिवारों को उनका हक दिलाना”..... सौरभ विष्णु ने कहा कि चार परिवारों ने सरकारी अस्पताल में अपने प्रियजनों को खोया और इसके बाद घोषित सहायता राशि के लिए भी उन्हें लंबे समय तक इंतजार करना पड़ा। उन्होंने कहा कि याचिका के माध्यम से पूरी स्थिति न्यायालय के समक्ष रखी गई है। उनकी प्राथमिकता पीड़ित परिवारों को उनका हक जल्द दिलाना और सरकारी अस्पतालों में भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए प्रभावी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित कराना है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह याचिका किसी व्यक्ति या राजनीतिक दल के खिलाफ नहीं है। मामला अब न्यायालय के समक्ष है और उन्हें न्यायालय से उचित न्याय की उम्मीद है। सरकारी अस्पतालों की सुरक्षा ऑडिट की मांग.....

5-5 लाख रुपये तथा घायलों को 50-50 हजार रुपये की सहायता राशि देने की सार्वजनिक घोषणा की गई थी। इसके बावजूद याचिका दाखिल किए जाने तक 15 महीने से अधिक समय बीतने के बाद भी संबंधित परिवारों को घोषित राशि का भुगतान नहीं किया गया। RTI के जवाब को बनाया आधार..... याचिका में एमजीएम अस्पताल की ओर से 31 अगस्त 2026 को सूचना के अधिकार के तहत दिए गए जवाब का भी उल्लेख किया गया है। सौरभ विष्णु के अनुसार, आरटीआई के जवाब में अस्पताल प्रशासन ने स्वीकार किया है कि मुआवजे के भुगतान की प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है। इस दस्तावेज को याचिका के साथ उच्च न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। याचिका में तर्क दिया गया है कि सरकार द्वारा सार्वजनिक रूप से की गई सहायता राशि की घोषणा से प्रभावित परिवारों में वैध अपेक्षा उत्पन्न होती है। लंबे समय तक घोषित सहायता का भुगतान लंबित रहना प्रशासनिक जवाबदेही और संवैधानिक अधिकारों से जुड़ा गंभीर विषय है। याचिकाकर्ता ने यह भी कहा है कि हादसे में अपनों को खोने वाले परिवारों को सहायता के लिए लंबे समय तक सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाना पड़ा, जिससे उनकी परेशानी और बढ़ी।

ऑटोइम्यून, हार्मोनल और स्त्री-स्वास्थ्य संबंधी विकार

केवल लक्षण नहीं, पूरे स्वास्थ्य को समझना जरूरी

आरोग्य दृष्टि - डॉ. राजश्री वर्मा के साथ



लेखिका: डॉ. राजश्री वर्मा
संस्थापक, जनपरिप्रेक्ष्य दर्पण

आज चिकित्सा जगत के सामने अनेक ऐसी दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएँ हैं जिनमें रोगी केवल एक लक्षण से परेशान नहीं होता, बल्कि उसके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक जीवन पर भी व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। ऑटोइम्यून रोग, अंतःस्रावी (Endocrine) एवं हार्मोनल विकार तथा महिलाओं में PCOS/PCOD और Endometriosis जैसी स्थितियाँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन रोगों के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सही निदान और समय पर चिकित्सा आवश्यक है। थकान, वजन में असामान्य बदलाव, मासिक धर्म की अनियमितता, अत्यधिक दर्द, मुहाँसे, अनचाहे बालों की वृद्धि, गर्भधारण में कठिनाई अथवा लंबे समय तक बने रहने वाले अन्य लक्षणों को केवल सामान्य समस्या मानकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

ऑटोइम्यून रोगों में सही पहचान क्यों महत्वपूर्ण है?

Autoimmune diseases में शरीर की immune system अपने ही tissues को असामान्य रूप से target करने लगती है। अलग-अलग autoimmune conditions शरीर के अलग-अलग अंगों और प्रणालियों को प्रभावित कर सकती हैं। इनमें सही diagnosis अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक ही प्रकार के सामान्य लक्षण जैसे fatigue, pain अथवा कमजोरी अनेक अलग-अलग कारणों से उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए स्वयं किसी बीमारी का अनुमान लगाकर उपचार शुरू करने के बजाय आवश्यक clinical evaluation और investigations कराना चाहिए।

PCOS/PCOD को समझना

Polycystic Ovary Syndrome (PCOS) एक जटिल endocrine-metabolic स्थिति है। इसका प्रभाव केवल मासिक धर्म तक सीमित नहीं रहता। कुछ महिलाओं में अनियमित मासिक धर्म, androgen से संबंधित लक्षण, वजन और metabolic health से जुड़ी समस्याएँ तथा fertility संबंधी कठिनाइयाँ सामने आ सकती हैं। इसलिए प्रत्येक महिला के लिए उपचार एक जैसा नहीं हो सकता। वर्तमान evidence-based guidelines में lifestyle management को महत्वपूर्ण माना गया है और आवश्यकता के अनुसार hormonal treatment, metformin तथा fertility से संबंधित उपचार जैसे विकल्पों का चयन किया जाता है।

Endometriosis: दर्द को सामान्य समझकर न टालें

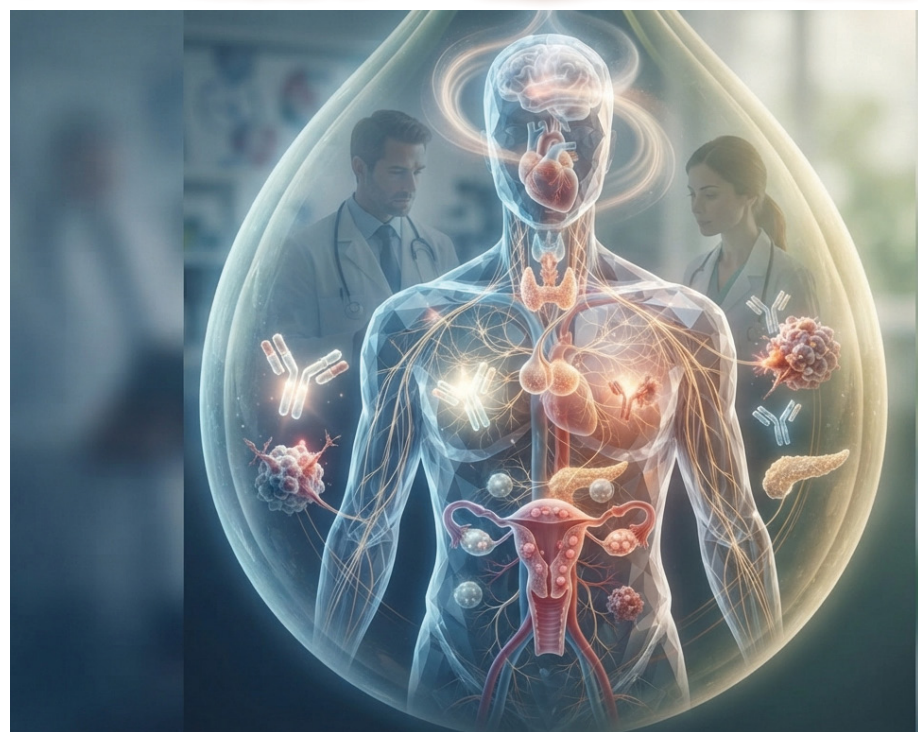
Endometriosis एक chronic condition है जिसमें uterus की lining से मिलता-जुलता tissue गर्भाशय के बाहर पाया जाता है। इससे गंभीर menstrual pain, pelvic pain, heavy bleeding तथा कुछ महिलाओं में infertility जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार इसका कोई ऐसा उपचार उपलब्ध नहीं है जो प्रत्येक रोगी में रोग को निश्चित रूप से समाप्त कर दे। उपचार का उद्देश्य symptoms को नियंत्रित करना और दीर्घकालिक प्रभावों को कम करना होता है। इसके लिए आवश्यकता के अनुसार pain-relieving medicines, hormonal therapies, surgery और fertility treatment जैसे विकल्प अपनाए

जाते हैं। इसलिए अत्यधिक period pain को केवल "सामान्य माहवारी का दर्द" मानकर वर्षों तक सहते रहना उचित नहीं है।

होम्योपैथी की भूमिका को कैसे देखें?

होम्योपैथी में रोगी की शिकायतों और उसके समग्र clinical presentation के आधार पर individualized approach अपनाई जाती है। कई रोगी chronic conditions में complementary care के रूप में होम्योपैथी की ओर भी जाते हैं। लेकिन यहाँ वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाए रखना आवश्यक है। वर्तमान उच्च-गुणवत्ता clinical evidence किसी विशिष्ट बीमारी के प्रभावी उपचार के रूप में homeopathy को स्थापित नहीं करता। इसलिए PCOS, Endometriosis, endocrine disorders अथवा autoimmune diseases में इसे प्रमाणित medical treatment का विकल्प बताना उचित नहीं होगा। यदि कोई रोगी होम्योपैथी अथवा किसी अन्य complementary approach का उपयोग करना चाहता है, तो उसे अपने treating healthcare professionals को इसकी जानकारी देनी चाहिए। पहले से चल रही आवश्यक दवाओं को स्वयं बंद करना या आवश्यक investigations तथा specialist consultation में देरी करना नुकसानदेह हो सकता है।

हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता: बीमारी का नाम जान लेना ही स्वास्थ्य-जागरूकता नहीं है। अपने शरीर में हो रहे बदलावों को पहचानना, समय पर चिकित्सकीय सलाह लेना, आवश्यक जाँच कराना और उपचार के उपलब्ध विकल्पों को समझकर निर्णय लेना अधिक महत्वपूर्ण है। विशेषकर महिलाओं को



अनियमित मासिक धर्म, लगातार pelvic pain, अत्यधिक bleeding, infertility या अन्य persistent hormonal symptoms को चुपचाप सहते नहीं रहना चाहिए। चिकित्सा का उद्देश्य केवल किसी रिपोर्ट के आँकड़ों को सामान्य करना नहीं,

बल्कि रोगी के स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाना भी है। इसके लिए वैज्ञानिक प्रमाण, चिकित्सकीय अनुभव, रोगी की व्यक्तिगत परिस्थितियाँ और उसकी informed choice सभी का सम्मान आवश्यक है।

स्वास्थ्य सूचना: यह लेख जन-जागरूकता एवं शैक्षणिक उद्देश्य से है। इसे व्यक्तिगत चिकित्सकीय परामर्श, diagnosis या treatment का विकल्प न माना जाए। किसी भी दवा को शुरू, बंद या परिवर्तित करने से पहले योग्य चिकित्सक से परामर्श लें।

संपादकीय

टाटाजी के सपनों का शहर... आखिर किसके भरोसे?



चाणक्य शाह....

जमशेदपुर टाटाजी के सपनों से बसा वह शहर, जिसकी पहचान कभी उद्योग, अनुशासन और शांति से होती थी। लेकिन आज यही शहर अपराध की लगातार सामने आ रही घटनाओं से चिंतित है। कहीं गोली चल रही है, कहीं लूट हो रही है, कहीं हत्या की खबर है तो कहीं अपराधी बेखौफ होकर वारदात को अंजाम दे रहे हैं। सवाल सिर्फ वारदातों का नहीं है। असली

सवाल यह है कि क्या अपराधियों के मन में कानून का वह खौफ बचा है, जो किसी भी मजबूत कानून-व्यवस्था की पहली शर्त है?

करीब तीन दशक पहले जमशेदपुर भी अपराध और माफिया गतिविधियों की चुनौती से गुजर रहा था। उसी दौर में आईपीएस अधिकारी डॉ. अजय कुमार की बतौर पुलिस कप्तान जमशेदपुर में तैनाती हुई। उनकी सख्त पुलिसिंग और अपराधियों पर कार्रवाई को लेकर आज भी उस दौर की चर्चा होती है। आज परिस्थितियां बदली हैं, अपराध का स्वरूप बदला है, तकनीक बदली है लेकिन चुनौती फिर वही है, अपराधियों में कानून का भय पैदा करना।

सवाल किसी व्यक्ति का नहीं, पुलिस नेतृत्व के उस तेवर का है, जो अपराध होने के बाद सिर्फ कार्रवाई न करे, बल्कि अपराध की योजना बनने से पहले ही उसे रोक दे। शहर को चाहिए मजबूत इंटेलिजेंस नेटवर्क, अपराधियों के आर्थिक तंत्र पर प्रहार, हथियार और नशे के नेटवर्क पर शिकंजा, त्वरित पुलिस रिस्पांस और ऐसी जवाबदेही, जिससे आम नागरिक का भरोसा पुलिस पर और अपराधी का डर कानून पर कायम रहे। क्योंकि जमशेदपुर सिर्फ एक औद्योगिक शहर नहीं, लाखों लोगों के सपनों और मेहनत की पहचान है। और इस शहर की पहचान अपराध की सुर्खियों से नहीं होनी चाहिए।

जमशेदपुर को ऐसी पुलिसिंग चाहिए, जिसमें आम आदमी बेखौफ रहे... और अपराधी कानून का नाम सुनकर रास्ता बदलने पर मजबूर हो जाए। सवाल सीधा है क्या अब वक्त आ गया है कि जमशेदपुर में फिर पुलिसिंग का वही सख्त तेवर दिखाई दे?

निखार सबलोक हत्याकांड के साजिशकर्ता

अशोक सिंह उर्फ राघव एमजीएम रेफर

जमशेदपुर : युवा कारोबारी निखार सबलोक हत्याकांड के मुख्य साजिशकर्ता के रूप में गिरफ्तार अशोक कुमार सिंह उर्फ राघव को बेहतर इलाज एवं जांच के लिए एमजीएम अस्पताल, जमशेदपुर रेफर किया गया है। बताया जाता है कि राघव पिछले कई दिनों से सरायकेला सदर अस्पताल में इलाजगत था। मेडिकल बोर्ड की अनुशंसा के बाद उसे एमजीएम भेजा गया। सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ. पीएम बाड़ा के अनुसार, जेल में तबीयत बिगड़ने के बाद राघव को 12 सितंबर को सदर अस्पताल लाया गया था। यहां उसकी चिकित्सीय जांच कराई गई, लेकिन बीमारी की स्थिति का स्पष्ट आकलन नहीं हो सका। इसके बाद मेडिकल बोर्ड ने बेहतर जांच के लिए उसे एमजीएम रेफर करने का निर्णय लिया। आवश्यक



कागजी प्रक्रिया पूरी होने के बाद उसे एमजीएम भेज दिया गया। बताया गया कि निखार सबलोक हत्याकांड की जांच के दौरान पुलिस पूछताछ के बीच 29 अगस्त को राघव की तबीयत बिगड़ गई थी। इसके बाद पुलिस उसे इलाज के लिए एमजीएम अस्पताल लेकर पहुंची, जहां चिकित्सकों ने बेहतर उपचार के लिए टीएमएच रेफर किया था। इलाज के बाद टीएमएच से छुट्टी मिलने पर पुलिस ने उसे न्यायिक हिरासत में सरायकेला जेल भेज दिया था। अब दोबारा तबीयत से जुड़ी परेशानी सामने आने के बाद मेडिकल बोर्ड की अनुशंसा पर राघव को एमजीएम अस्पताल रेफर किया गया है। मामले में आगे की चिकित्सीय जांच एवं पुलिस कार्रवाई जारी है।



9 महीने से पेंशन को तरस रही बुजुर्ग महिला को मिला न्याय

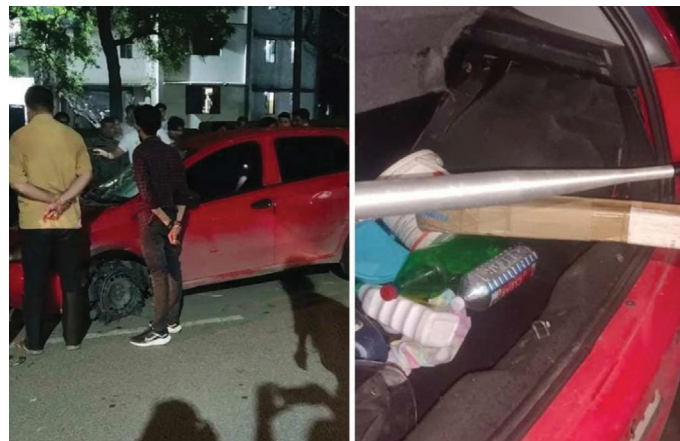
जमशेदपुर : जेम्को आजाद बस्ती निवासी 68 वर्षीय बुजुर्ग रीना चक्रवर्ती को नौ महीने से वृद्धावस्था पेंशन नहीं मिल रही थी। आर्थिक परेशानी से जूझ रही महिला ने सामाजिक कार्यकर्ता करनदीप सिंह से मदद की गुहार लगाई। करनदीप सिंह ने मामले को सोशल मीडिया के माध्यम से जिले के उपायुक्त के संज्ञान में पहुंचाया। उपायुक्त ने तत्काल मामले का संज्ञान लेते हुए सहायक निदेशक, सामाजिक सुरक्षा को जांच कर अविलंब पेंशन राशि का भुगतान सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। मामले में त्वरित कार्रवाई के लिए करनदीप सिंह ने उपायुक्त के प्रति आभार व्यक्त किया।



पुलिस चेकिंग से भाग रही कार के दोनों टायर फटे....

टिमकेन कंपनी रोड पर देर रात पीछा कर पुलिस ने दो युवकों व दो युवतियों को हिरासत में लिया

जमशेदपुर : टिमकेन कंपनी रोड पर मंगलवार देर रात पुलिस चेकिंग के दौरान एक तेज रफ्तार कार को रोकने की कोशिश के बाद हड़कंप मच गया। पुलिस को देखते ही कार सवार युवक वाहन लेकर भागने लगे। पुलिस ने पीछा किया तो कुछ दूर जाने के बाद कार के दोनों टायर फट गए, जिसके बाद पुलिस ने वाहन को रोककर उसमें सवार चार लोगों को हिरासत में ले लिया। बताया जाता है कि कार में दो युवक और दो युवतियां सवार थे। पुलिस ने कार की तलाशी ली, जिसमें करीब 10 पैकेट सिगरेट, हॉकी, स्टील की रॉड और शराब की बोतलें बरामद होने की बात सामने आई है।



पुलिस ने सभी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि कार सवार युवक चेकिंग देखकर क्यों भागे और बरामद सामान किस उद्देश्य से रखा गया था। मामले में पुलिस की जांच जारी है।

गधे के नाम जारी हुआ नर्सिंग सर्टिफिकेट

भोपाल : मध्य प्रदेश में नर्सिंग रजिस्ट्रेशन की ऑनलाइन व्यवस्था को लेकर ऐसा मामला सामने आया है, जिसने पूरे सिस्टम की जांच प्रक्रिया पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। एक परीक्षण आवेदन में गधे की तस्वीर लगाकर, नाम 'DONKEY MPNRC', पिता का नाम 'DONKEY FATHER', माता का नाम 'DONKEY MOTHER' और जाति 'Animal' दर्ज की गई। इसके बावजूद ऑनलाइन प्रक्रिया के जरिए नर्सिंग का डिजिटल रजिस्ट्रेशन प्रमाणपत्र जारी हो गया। मामला सामने आने के बाद यह सवाल तेजी से उठ रहा है कि जब आवेदन में ही इतनी स्पष्ट रूप से फर्जी और असामान्य जानकारी दर्ज थी, तो ऑनलाइन सिस्टम ने इसे शुरूआती स्तर पर ही क्यों नहीं रोका? गधे की फोटो से लेकर 'डंकी फादर' तक दर्ज थी जानकारी.....

रिपोर्ट के मुताबिक यह आवेदन NSUI के प्रदेश उपाध्यक्ष रवि परमार ने ऑनलाइन पोर्टल की जांच के लिए किया था। आवेदन में उम्मीदवार की तस्वीर के स्थान पर गधे की तस्वीर लगाई गई। नाम 'DONKEY MPNRC', पिता का नाम 'DONKEY FATHER', माता का नाम 'DONKEY MOTHER' और जाति के कॉलम में 'Animal' दर्ज किया गया। इतना ही नहीं, शैक्षणिक योग्यता से जुड़े ऐसे दस्तावेज अपलोड किए गए,



जिनसे वास्तविक नर्सिंग योग्यता साबित नहीं होती थी। इसके बावजूद आवेदन ऑनलाइन प्रक्रिया में आगे बढ़ा।

2,050 शुल्क जमा हुआ और जारी हो गया डिजिटल सर्टिफिकेट.....

रिपोर्ट के अनुसार आवेदन के लिए 2,050 का शुल्क भी जमा किया गया। इसके बाद ऑनलाइन डिजिटल रजिस्ट्रेशन प्रमाणपत्र जारी कर दिया गया। प्रमाणपत्र

में 'DONKEY MPNRC' को नर्स-मिडवाइफ के रूप में पंजीकृत दिखाया गया तथा भोपाल के एक नर्सिंग कॉलेज से B.Sc Nursing से संबंधित जानकारी दर्ज थी। यही वह बिंदु है जिसने पूरी ऑनलाइन सत्यापन व्यवस्था पर सबसे बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है।

मामला खुला तो MPNRC ने रोका ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन.....

मामला सामने आने के बाद मध्य प्रदेश नर्सिंग रजिस्ट्रेशन काउंसिल (MPNRC) ने फिलहाल ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया रोक दी है। काउंसिल की अध्यक्ष डॉ. बीनू कुशवाहा के अनुसार वेबसाइट में अतिरिक्त सुरक्षा उपाय किए जाएंगे। काउंसिल ने इसे फर्जी जानकारी के जरिए किया गया फ्राड बताया है और अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ FIR की प्रक्रिया की बात कही है। काउंसिल की ओर से यह भी स्पष्ट किया गया है कि ऑनलाइन जारी किया जाने वाला प्रमाणपत्र प्रोविजनल होता है।

सबसे बड़ा सवाल जब गधा नहीं पकड़ा गया, तो फर्जी दस्तावेज कैसे पकड़े जाएंगे?.....

इस पूरे मामले ने ऑनलाइन व्यवस्था की कार्यप्रणाली पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। आवेदन में उम्मीदवार की जगह गधे की तस्वीर, पिता के नाम में 'DONKEY FATHER' और जाति में 'Animal' जैसी जानकारी दर्ज होने के बावजूद सिस्टम द्वारा

आवेदन को आगे बढ़ा देना अपने आप में जांच का विषय है। हालांकि, उपलब्ध जानकारी के आधार पर इसे किसी वास्तविक गधे को स्थायी नर्सिंग लाइसेंस मिलने का मामला नहीं कहा जा सकता। मामला ऑनलाइन पोर्टल से जारी हुए प्रोविजनल रजिस्ट्रेशन और उसके बाद होने वाली दस्तावेज सत्यापन प्रक्रिया से जुड़ा है।

ऑनलाइन सिस्टम की 'स्मार्टनेस' पर ही सवाल.....

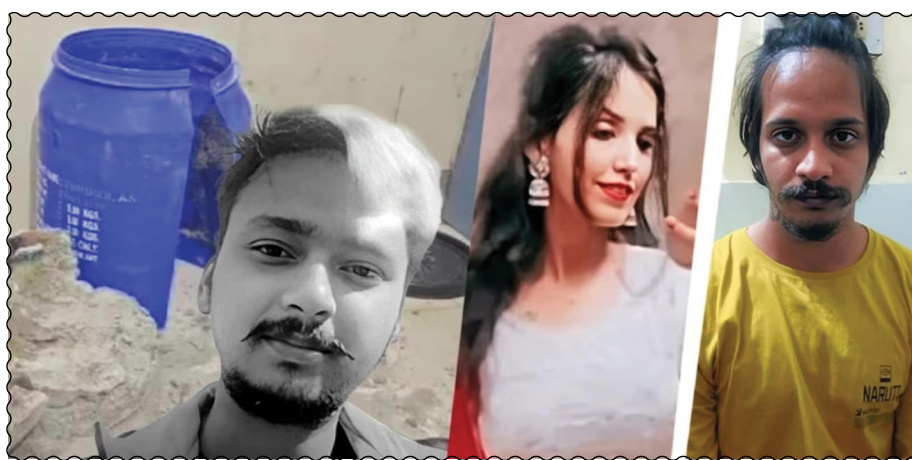
सरकार जहां अधिक से अधिक सेवाओं को ऑनलाइन और डिजिटल बनाने पर जोर दे रही है, वहीं इस तरह की घटना डिजिटल सत्यापन व्यवस्था की मजबूती पर सवाल खड़े करती है। अगर एक परीक्षण आवेदन में इतनी स्पष्ट विसंगतियां होने के बावजूद प्रोविजनल प्रमाणपत्र जारी हो सकता है, तो वास्तविक अभ्यर्थियों के मामले में पहचान, शैक्षणिक योग्यता और दस्तावेजों की शुरूआती जांच किस स्तर पर होती है यह सवाल अब जांच के केंद्र में है। फिलहाल काउंसिल ने प्रक्रिया रोककर सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की बात कही है। अब देखना होगा कि जांच में इस पूरे घटनाक्रम की तकनीकी खामी सामने आती है या आवेदन प्रक्रिया में मानवीय स्तर पर भी कोई चूक हुई थी। एक गधे के नाम जारी प्रमाणपत्र ने फिलहाल पूरे ऑनलाइन नर्सिंग रजिस्ट्रेशन सिस्टम की 'परीक्षा' जरूर ले ली है।

‘नीला ड्रम’ हत्याकांड में मुस्कान और साहिल दोषी....

मेरठ : बहुचर्चित 'नीला ड्रम' हत्याकांड में मेरठ की जिला अदालत ने बुधवार को सौरभ राजपूत की हत्या के मामले में उसकी पत्नी मुस्कान रस्तोगी और साहिल शुक्ला को दोषी करार दिया। दोनों आरोपियों को जेल से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए अदालत में पेश किया गया। अदालत के दोषसिद्धि के फैसले के बाद अब मामले की अगली और अहम सुनवाई 14 अक्टूबर को होगी, जब दोनों दोषियों की सजा पर आदेश सुनाया जाएगा। फैसले को लेकर अदालत परिसर में दिनभर गहमागहमी का माहौल रहा। सौरभ राजपूत के परिजन भी अदालत में मौजूद रहे। दोषसिद्धि के बाद परिवार ने दोनों दोषियों को कड़ी सजा दिए जाने की मांग की है। अभियोजन पक्ष पहले ही मामले को पूर्व नियोजित हत्या बताते हुए दोनों के लिए अधिकतम सजा की मांग कर चुका है।

126 तारीखों तक चली सुनवाई, 22 से अधिक गवाहों के बयान.....

मामले की सुनवाई लंबे समय तक चली। ट्रायल के दौरान अदालत में 126 तारीखों पर सुनवाई हुई, जबकि 22 से अधिक गवाहों के बयान दर्ज किए गए। अभियोजन और बचाव पक्ष ने अपने-अपने तर्क अदालत के सामने रखे। सुनवाई के दौरान वैज्ञानिक साक्ष्य, पोस्टमार्टम रिपोर्ट, फॉरेंसिक जांच और पुलिस विवेचना से संबंधित दस्तावेज भी अदालत में पेश किए गए। बचाव पक्ष ने प्रत्यक्षदर्शी के अभाव और



परिस्थितिजन्य साक्ष्यों को लेकर सवाल उठाए, जबकि अभियोजन पक्ष का तर्क रहा कि पुलिस और फॉरेंसिक जांच से सामने आए साक्ष्यों की कड़ियां एक-दूसरे से जुड़ती हैं और घटनाक्रम को स्पष्ट करती हैं। **मार्च 2025 में सामने आया था सनसनीखेज मामला.....**

यह मामला मार्च 2025 में सौरभ राजपूत की गुमशुदगी के बाद सामने आया था। सौरभ के परिवार की शिकायत के बाद पुलिस ने जांच शुरू की। जांच के दौरान पुलिस का संदेह उसकी पत्नी मुस्कान रस्तोगी और साहिल शुक्ला पर गया। बाद में दोनों को

गिरफ्तार किया गया। अभियोजन के अनुसार, सौरभ की हत्या के बाद उसके शव के टुकड़े किए गए और उन्हें एक बड़े नीले ड्रम में डालकर सीमेंट से बंद कर दिया गया। शव की बरामदगी के बाद यह मामला देशभर में 'नीला ड्रम हत्याकांड' के नाम से चर्चित हो गया। पुलिस जांच के दौरान यह भी सामने आया था कि हत्या के बाद मुस्कान और साहिल मेरठ से बाहर चले गए थे। पुलिस की जांच और पृष्ठताछ के दौरान उनकी निशानदेही पर नीले ड्रम से शव बरामद किया गया। अभियोजन ने इस बरामदगी और अन्य वैज्ञानिक साक्ष्यों को मामले की महत्वपूर्ण कड़ियों में शामिल

किया।

प्रेम विवाह के बाद बढ़ी नजदीकियां, फिर सामने आया खूनी अंजाम.....

सौरभ के परिजनों के अनुसार, सौरभ ने मुस्कान से प्रेम विवाह किया था। परिवार का आरोप था कि बाद में मुस्कान और साहिल के बीच नजदीकियां बढ़ीं और इससे वैवाहिक जीवन में तनाव पैदा हुआ। अभियोजन ने इसी पृष्ठभूमि को हत्या की कथित साजिश से जोड़ते हुए अदालत के सामने परिस्थितिजन्य एवं वैज्ञानिक साक्ष्य प्रस्तुत किए। हालांकि बचाव पक्ष ने अभियोजन के इस घटनाक्रम और परिस्थितिजन्य साक्ष्यों पर सवाल उठाए। अदालत ने दोनों पक्षों की दलीलों और रिकॉर्ड पर उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर बुधवार को दोनों को दोषी करार दिया।

परिवार को अब 14 अक्टूबर का इंतजार.....

दोषसिद्धि के बाद सौरभ के परिवार की नजर अब 14 अक्टूबर की सुनवाई पर है। सौरभ की मां और उसके बड़े भाई राहुल राजपूत पहले ही दोषियों के लिए कड़ी सजा की मांग कर चुके हैं। परिवार का कहना है कि वे लंबे समय से न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं और इस घटना ने पूरे परिवार को गहरा मानसिक आघात पहुंचाया है। अब अगली सुनवाई में अभियोजन और बचाव पक्ष सजा की अवधि को लेकर अपनी-अपनी दलीलें रखेंगे। इसके बाद अदालत दोनों दोषियों को दी जाने वाली सजा पर आदेश पारित करेगी।

गली अभी खाली नहीं हुई

स्त्री 3 का इंतज़ार अब 2028 तक स्क्रिप्ट तैयार, ट्विस्ट और तीखे



फिक्की प्रेम्स के 26वें संस्करण में, जब राजकुमार राव निर्माता दिनेश विजन के साथ मंच पर बैठे थे, सवाल वही था जिस पर महॉक के हॉरर-कॉमेडी यूनिवर्स के दर्शक महीनों से अटके थे: स्त्री कब लौटेगी? विजन ने जवाब सीधा दिया। तीसरी किश्त 2028 में सिनेमाघरों में आएगी। आधिकारिक तारीख अभी तय नहीं हुई, पर उन्होंने संकेत छोड़ दिया कि यह 15 अगस्त या क्रिसमस के आसपास का तोहफा हो सकती है। वही खिड़की, जहाँ फ्रेंचाइजी की पिछली किश्तें भी भीड़ खींच चुकी हैं।

सबसे बड़ा संकेत पदों के पीछे से आया। अमर कौशिक स्क्रिप्ट लिख चुके हैं। विजन ने कहानी के दरवाजे जान-बूझकर बंद रखे। “अगर मैं और कुछ कहूँगा तो वे नाराज हो जाएँगे। उन्हें लगता है मैं बहुत ज्यादा

स्पॉइलर दे देता हूँ। जो चीजें आपने पहले पसंद की थीं, वे मिलेंगी। लेकिन शुरुआत कहाँ से होती है और अंत कहाँ जाकर रुकता है वह पूरा खुलासा होगा।” मतलब साफ है: छोटी-सी कस्बाई हवा, हँसी और डर का वही मिश्रण, पर मोड़ इस बार पहले से तीखे। दर्शकों को वही चेहरे, वही लय मिलेगी और साथ में ऐसा ट्विस्ट, जो पुरानी थ्योरीज को हिला दे।

बीच में एक लंबा पड़ाव है। कौशिक सीधे स्त्री 3 पर नहीं जाएँगे। पहले वे महावतार संभालेंगे: कौशल की वह महत्वाकांक्षी फिल्म, जो भगवान परशुराम की कथा पर टिकी है। विजन के मुताबिक शूटिंग जनवरी 2027 के आखिर में शुरू होगी और जून तक पूरी करने की योजना है। उसके बाद टीम अगले साल के अंत तक स्त्री 3 को फ्लोर पर उतारना चाहती है। यानी लेखन पूरा, शूटिंग अभी दूर, रिलीज और एक साल बाद।

राजकुमार राव और श्रद्धा कपूर के लौटने की बात फ्रेंचाइजी की निरंतरता से जुड़ी है। 2018 की स्त्री ने छोटी बजट की हॉरर-कॉमेडी को मुख्यधारा में खींचा था। 2024 की स्त्री 2 ने उसे ब्लॉकबस्टर बना दिया। तीसरी किश्त उन्हीं चेहरों के इर्द-गिर्द बुनी जा रही है। विजन ने कौशिक को इस पूरी फ्रेंचाइजी का सबसे अहम हिस्सा बताया: निर्देशक, जिसने स्त्री की आवाज को पहचाना और बाद में भेड़िया, मुंज्या जैसी फिल्मों वाले यूनिवर्स को एक सूत्र में बाँधा।

दर्शकों के लिए मतलब दोहरा है। एक तरफ इंतज़ार लंबा हो गया है। दूसरी तरफ यह साफ है कि कहानी अधूरी नहीं छोड़ी जा रही। गली अभी खाली नहीं हुई। सिर्फ पर्दा थोड़ी देर से उठेगा 2028 में, जब शुरुआत और अंत दोनों चौकाने के लिए तैयार हों।

नागोया में बंद हुआ निशाना

15 पदक, 3 स्वर्ण, और नीरू ढांडा की वह शाम जब भारत की शूटिंग फिर चमक उठी



आखिरी फायरिंग रेंज पर जब धुआँ थमा, तो भारत का शूटिंग अभियान संख्या में पूरा था, पदक तालिका में भारी नहीं। नागोया में पुरुषों की 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल के फाइनल ने पर्दा गिराया। अनीश भानवाला सातवें स्थान पर बाहर हुए, और उसके साथ देश ने एशियाई खेल 2026 में निशानेबाजी का सफर तीन स्वर्ण, आठ रजत और चार कांस्यकुल 15 पदकों पर समेट लिया। इन खेलों में भारत के कुल पदकों की गिनती में यह आँकड़ा सिर्फ एथलेटिक्स से कम है। अनीश का रास्ता फाइनल तक सीधा नहीं था। क्वालीफिकेशन में वे 576 के स्कोर के साथ नौवें रंशेरीष आठ से बाहर। जगह फिर भी बनी, क्योंकि नियम एक देश के अधिकतम दो निशानेबाजों को फाइनल में आने देता है। दक्षिण कोरिया के तीन शूटर क्वालीफाई कर चुके थे। सबसे निचली रैंकिंग वाले सोंग जोंग-हो (580, चौथा स्थान) को हटना पड़ा, और अनीश अंदर आ गए। कोरिया के ली गन-ह्योक (588) और यून सियो-योंग (581) दूसरे और तीसरे स्थान पर टिके रहे। चीन के सु लियानबोफान ने 592 के एशियाई खेल रिकॉर्ड के साथ क्वालीफिकेशन में शीर्ष जगह ली।

फाइनल में अनीश ने निर्णायक चरण में पाँच में से चार निशाने साधे और 15 शॉट में 11 हिट के साथ प्रतियोगिता समाप्त की। एक मोड़ पर वे तीसरे स्थान के लिए बराबरी पर थे। टाईब्रेकर क्वालीफिकेशन स्कोर से तय हुआ और कम अंक उन्हें पीछे छोड़ गए। आठ में सातवें स्थान पर बाहर।

फाइनल का स्वर्ण दक्षिण कोरिया के गन-ह्योक ली के नाम रहा, जिन्होंने शूट-ऑफ में विश्व रिकॉर्ड धारक चीन के लियानबोफान सु को पीछे किया; दोनों 32 हिट पर थे, जो एशियाई रिकॉर्ड है। कांस्य पाकिस्तान के गुलाम मुस्तफा बशीर के पास गया। अभियान की असली चमक ट्रैप रेंज पर रही। नीरू ढांडा भारत की सबसे सफल निशानेबाज रहेंदो स्वर्ण और एक रजत। महिला ट्रैप व्यक्तिगत में उन्होंने इतिहास रचा: एशियाई खेलों में इस इवेंट का व्यक्तिगत स्वर्ण जीतने वाली पहली भारतीय महिला। बारिश में फाइनल में 26 के स्कोर के साथ शीर्ष पर रहीं और पुराने रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया। अगले दिन काइनान चेनाई के साथ मिक्स्ट टीम ट्रैप में 34 का स्कोर जमा कर एशियाई रिकॉर्ड तोड़ा: पिछला रिकॉर्ड 30 का था, जो इसी साल कतर ने बनाया था। फाइनल में कतर 32 पर रजत रहा, चीन 23 पर कांस्य। यह भारत का इस इवेंट में पहला पदक भी था। टीम स्पर्धा का रजत उनके खाते में पहले से था। 26 साल की हरियाणा की निशानेबाज ने कुछ दिनों में ही अभियान का चेहरा बदल दिया। तुलना फिर भी हांगझोउ से बच नहीं पाती। 2023 एशियाई खेलों (हांगझोउ) में भारत ने शूटिंग में 22 पदक जीते थे: सात स्वर्ण, नौ रजत, छह कांस्य: जो किसी एक संस्करण में देश का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। नागोया का 15 का आँकड़ा उससे कम है। मेडल टेबल पर चीन बहुत आगे रहा, करीब 28 पदकों के साथ। भारत शूटिंग में दूसरे स्थान के आसपास टिका।

स्क्रेप कारोबारी बबलू जायसवाल के ठिकानों पर ईडी की दबिश, कई स्थानों पर एक साथ छापेमारी

बिष्टपुर आवास से लेकर आदित्यपुर और गम्हरिया के औद्योगिक परिसरों तक पहुंची जांच टीम, दस्तावेज व इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस खंगाले

जमशेदपुर : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार की सुबह जमशेदपुर और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों में स्क्रेप कारोबारी ज्ञानचंद जायसवाल उर्फ बबलू जायसवाल से जुड़े कई ठिकानों पर एक साथ छापेमारी की। केंद्रीय जांच एजेंसी की अलग-अलग टीमों ने सुबह करीब आठ बजे कार्रवाई शुरू की। बिष्टपुर के कांटेक्ट्स एरिया स्थित आवासीय परिसर के अलावा आदित्यपुर और गम्हरिया औद्योगिक क्षेत्र में स्थित कारोबारी प्रतिष्ठानों को भी जांच के दायरे में लिया गया है। छापेमारी को देखते हुए सभी प्रमुख परिसरों के बाहर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई। जांच वाले स्थानों पर बाहरी लोगों की आवाजाही रोक दी गई, जबकि परिसर के भीतर मौजूद लोगों को भी जांच पूरी होने तक बाहर निकलने की अनुमति नहीं दिए जाने की जानकारी सामने आई है। स्थानीय पुलिस बल की भी तैनाती की गई है।

कई ठिकानों पर एक साथ जांच.....
जानकारी के अनुसार ईडी की टीमों ने बिष्टपुर के कांटेक्ट्स एरिया स्थित आवास के साथ-साथ बर्मामाईंस, जुगसलाई और आदित्यपुर के हथियाडीह स्थित शारदा एंडेवर्स फैक्ट्री में भी तलाशी ली। जांच के दौरान अधिकारियों ने कारोबारी गतिविधियों से जुड़े दस्तावेज, वित्तीय लेनदेन का रिकॉर्ड, खरीद-बिक्री से संबंधित कागजात तथा कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की जांच की। सूत्रों के मुताबिक तलाशी के दौरान कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज मिलने और उन्हें जब्त किए जाने की भी सूचना है। हालांकि, इस संबंध में ईडी की ओर से अभी कोई विस्तृत आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है।

55.66 करोड़ के जीएसटी मामले में पहले भी हो चुकी है गिरफ्तारी.....

ज्ञानचंद जायसवाल का नाम इससे पहले भी जीएसटी से जुड़े एक मामले में सामने आ चुका है। पूर्व में उन पर करीब 55.66 करोड़ रुपये के कथित जीएसटी घोटाले का आरोप लगा था और मामले में उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। बताया गया था कि जांच में कुछ कंपनियों के माध्यम से गलत तरीके से इनपुट टैक्स क्रेडिट हासिल करने का मामला सामने आया था। इसमें मेसर्स जय



करीब 750 करोड़ के कथित जीएसटी फर्जीवाड़े से जुड़ा मामला.....

प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक ईडी की यह कार्रवाई करीब 750 करोड़ रुपये के कथित जीएसटी फर्जीवाड़े और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े मामले में की जा रही है। आरोप है कि कथित तौर पर बोगस कंपनियों और फर्जी बिलिंग के माध्यम से इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) का अनुचित लाभ लिया गया तथा सरकारी राजस्व को नुकसान पहुंचाया गया। मामले की जांच की संवेदनशीलता को देखते हुए प्रवर्तन निदेशालय की ओर से फिलहाल छापेमारी के संबंध में आधिकारिक तौर पर विस्तृत जानकारी साझा नहीं की गई है। ऐसे में कार्रवाई के दौरान बरामद दस्तावेजों और जांच में सामने आने वाले तथ्यों के आधार पर आगे की स्थिति स्पष्ट होने की संभावना है।

भोलानाथ कंपनी, मेसर्स मां शारदा एंडेवर और मेसर्स मेकर्स कास्टिंग प्राइवेट लिमिटेड से संबंधित करीब 22.31 करोड़ रुपये तथा मेसर्स केदारनाथ ट्रेक्सिन, ज्ञानदीप आयरन प्राइवेट लिमिटेड और मेसर्स विभ्रान स्क्रेप कंपनी से जुड़े करीब 33.35 करोड़ रुपये के

आईटीसी का उल्लेख किया गया था। इससे पहले 7 अगस्त 2025 को भी ज्ञानचंद जायसवाल से जुड़े ठिकानों पर जांच एजेंसियों की कार्रवाई हो चुकी है। अब एक बार फिर कई स्थानों पर एक साथ हुई ईडी की छापेमारी से कारोबारी और औद्योगिक क्षेत्र

में हलचल बढ़ गई है। फिलहाल ईडी की कार्रवाई जारी है और जांच पूरी होने के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि तलाशी के दौरान क्या-क्या दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य एजेंसी के हाथ लगे हैं तथा मामले में आगे क्या कार्रवाई की जाती है।